मोरंगे

मई–जून 2017

इस बार

खिड़की

3 क्या तुम मेरी माँ हो?

कविताएँ

6 पतंग / चिड़िया
7 पापा को मनाओ
8 नन्हीं बूंदे / काली–पीली होली
9 रेल चली

कहानियाँ

10 साँप से दोस्ती
11 चतुर लकड़हारा
12 पिंकी का जन्मदिन
13 सुनहरा बारहसिंगा
14 बुढ़िया के बेटे
15 शेर की भूख

याद की धूप–छाँव में

16 अभी कुछ बाकी है

बात लै चीत लै

19 मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी

21 मटरगश्ती बड़ी सस्ती
22 हीहीही–ठीठीठी
23 कुछ हमने बढ़ायी

ममता साहु, शिक्षिका

सम्पादन : विष्णु गोपाल मीणा
सहयोग : राजकीय विद्यालयों एवं उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : जीवनेद्र सिंह
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र – रिंकु मीना, उम्र–8 वर्ष, समूह–रौशनी
वर्ष 8 अंक 83–84

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, विभा–अमेरिका, पोर्टिकस–निदरलेण्ड, एच.टी. पारेख व W.C.T. के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विजेन्द्र पाल
सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
हॉटल सिटी हार्ट के सामने,
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

खिड़की

क्या तुम मेरी माँ हो?

सुमन प्रजापत
उम्र–9 वर्ष,
समूह–सितारे

अचानक अंडा थोड़ा कूदा।

''अरे वाह!'' माँ चिड़िया ने कहा, ''जल्दी ही अंडे में से मेरा बच्चा बाहर आएगा! फिर उसे जोर की भूख लगेगी। मुझे अपने चूजे के खाने के लिए कुछ लेकर आना चाहिए!'' उसने कहा, ''मैं जल्दी ही वापस आ जाऊंगी!''

फिर माँ चिड़िया फुर्र से उड़कर चली गई। अंडा उछला। वो इतना उछला–कूदा, उछला–कूदा! कि उसमें से चिड़िया का बच्चा बाहर निकल आया!

''मेरी माँ कहाँ है?'' उसने कहा। उसने माँ को चारों तरफ खोजा। उसने ऊपर देखा, उसे माँ नहीं दिखी। उसने नीचे देखा, उसे माँ नहीं दिखी।

''चलो, मैं माँ को जाकर ढूंढता हूँ'' उसने कहा। यह कहकर वो चल पड़ा। वो पेड़ से गिरा और फिर नीचे, गिरता ही चला गया। चिड़िया का बच्चा अभी छोटा था। वो उड़ नहीं सकता था।

वो उड़ नहीं सकता था, पर वो चल सकता था। उसने कहा, ''चलो, मैं अपनी माँ को तलाशने निकलता हूँ।''

उसने माँ को पहले कभी नहीं देखा था। वो अपनी माँ को पहचानता भी नहीं था। चलते– चलते वो अपनी माँ के पास से गुजरा। परंतु उसने अपनी माँ को नहीं पह. चाना। फिर वो एक छोटी बिल्ली के पास पहुँचा।

''क्या तुम मेरी माँ हो?'' उसने बिल्ली से पूछा। बिल्ली बस उसे टक–टकी लगाए घूरती रही। उसने कुछ नहीं कहा। बिल्ली उसकी माँ नहीं थी, इसलिए चिड़िया का बच्चा आगे बढ़ा। फिर वो एक मुर्गी के पास पहुँचा।

''क्या तुम मेरी माँ हो?'' उसने मुर्गी से पूछा। ''नहीं'' मुर्गी ने जवाब दिया। छोटी बिल्ली उसकी माँ नहीं थी। मुर्गी भी उसकी माँ नहीं थी। इसलिए चिड़िया का बच्चा आगे बढ़ा।

''मुझे अपनी माँ को खोजना है!'' उसने कहा, ''पर कहाँ? वो कहाँ है? वो कहाँ हो सकती है?'' फिर वो एक कुत्ते के पास जा पहुँचा।

''क्या तुम मेरी माँ हो?'' उसने कुत्ते से पूछा।

''मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ। मैं कुत्ता हूँ'' कुत्ते ने जवाब दिया। छोटी बिल्ली उसकी माँ नहीं थी, मुर्गी भी उसकी माँ नहीं थी, कुत्ता भी उसकी माँ नहीं था। चिड़िया का बच्चा फिर आगे बढ़ा। उसे एक गाय मिली।

''क्या तुम मेरी माँ हो?'' उसने गाय से पूछा।

''मैं तुम्हारी माँ कैसे हो सकती हूं?'' गाय ने कहा, ''मैं एक गाय हूँ।'' छोटी बिल्ली और मुर्गी भी उसकी माँ नहीं थे, कुत्ता और गाय भी उसकी माँ नहीं थे। क्या उसकी माँ थी भी?

''मेरी माँ थी, ''चिड़िया के बच्चे ने कहा। ''मुझे ये पक्का पता है। मुझे उसे खोजना ही पडेगा। मैं उसकी अवश्य तलाश करूंगा, पक्का!''

अब चिड़िया के बच्चे ने चलना छोड़ दिया। वो दौड़ने लगा। उसे एक टूटी फूटी मोटरकार दिखाई दी। क्या मोटरकार उसकी माँ हो सकती थी? नहीं, यह संभव नहीं था। चिड़िया का बच्चा रूका नहीं। तेजी से दौड़ता रहा। फिर उसने नीचे की और झुक कर देखा। उसे एक नाव दिखाई पड़ी। नाव को देखकर उसने कहा, ''वो रही मेरी माँ!'' वो नांव की तरफ देखकर चिल्लाया, परंतु नाव रूकी नहीं। नाव चलती ही गई। फिर उसने सिर उठाकर देखा। उसे एक बड़ा हवाई जहाज दिखाई दिया। ''माँ, मैं यहाँ पर हूँ!'' वो चिल्लाया। परंतु हवाई जहाज नहीं रूका। वो उड़ता ही चला गया। तभी चिड़िया के बच्चे को बड़ी सी चीज दिखाई दी। यह जरूर उसकी माँ होगी।

''माँ वहाँ है!'' वो चिल्लाया। ''वो मेरी माँ है!'' वो दौड़कर उसके एकदम पास आया। ''माँ, माँ! मैं यहाँ हूँ माँ!'' उसने उस बड़ी सी मशीन से कहा। परंतु उस बड़ी मशीन से केवल ''भप्प'' की जोरदार आवाज आई। ''तो तुम भी मेरी माँ नहीं हो, '' चिड़िया के बच्चे ने कहा, ''तुम तो एक बड़ी मशीन हो। मुझे यहाँ से निकलना चाहिए!'' परंतु चिड़िया के बच्चे के लिए वहाँ से भागना मुश्किल हो गया। तुरंत बड़ी मशीन

राज सोनवाल, उम्र–10 वर्ष, समूह–रिमझिम

उपर उठी। वो ऊपर, और ऊपर उठी। और उसके साथ–साथ चिड़िया का बच्चा भी ऊपर उठा। पर देखो वो बड़ी मशीन अब कहाँ जा रही है?

''अरे बाप रे!'' यह बड़ी मशीन अब मेरे साथ क्या करेगी? मुझे यहाँ से जल्दी निकालो!'' बस तभी वो बड़ी मशीन रूक गई।

''मै कहाँ हूं?'' चिड़िया के बच्चे ने कहा। ''मैं अब घर जाना चाहता हूं! मुझे अपनी माँ चाहिए!''

तभी कुछ हुआ। बड़ी मशीन ने चिड़िया के बच्चे को उठाकर उसे वापिस घौंसले में रख दिया। चिड़िया का बच्चा अन्त में अपने घर सुरक्षित पहुँच गया। बस तभी माँ चिड़िया भी पेड़ पर वापिस आई।

''क्या तुम्हे पता है कि मैं कौन हूँ?'' उसने अपने बच्चे से पूछा।

''हाँ मुझे मालूम है कि तुम कौन हो,'' चिड़िया के बच्चे ने जवाब दिया।

''तुम छोटी बिल्ली नहीं हो।
तुम मुर्गी नहीं हो।
तुम कुत्ता नहीं हो।
तुम गाय नहीं हो।
तुम नाव नहीं हो, न ही तुम हवाई जहाज हो,
न ही तुम बड़ी मशीन हो!''

''तुम एक चिड़िया हो, और तुम मेरी माँ हो।''

पी. डी. ईस्टमैन

स्रोत – भारत ज्ञान विज्ञान समिति

कविताएँ

पतंग

पतंग रे पतंग रे
ऊपर–ऊपर उड़ती जाती।
रस्सी टूटे तो गिर जाती।
सारे बच्चे तुझको लूटे।
लगे हवा तो ऊपर जाती।
पर किसी के हाथ न आती।

महेन्द्र गुर्जर,
उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

महेन्द्र,
उम्र–8 वर्ष,
समूह–सागर

चिड़िया

चिड़िया रानी कहो कहानी।
फूदक–फूदक पीती पानी।
कभी मचलती कभी उछलती
करती बड़ी शैतानी तुम।
चिड़िया रानी चिड़िया रानी।
आसमान में उड़ती हो।
तारों से तुम लड़ती हो।
काम बड़े तुम करती हो।
चिड़िया रानी बड़ी सयानी।
जब चूके नजर तुम्हारी।
पिंजरे में फंस जाती हो।

कुलदीप मीना,
उम्र–12 वर्ष, समूह–उजाला

ज्योति मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–उजाला

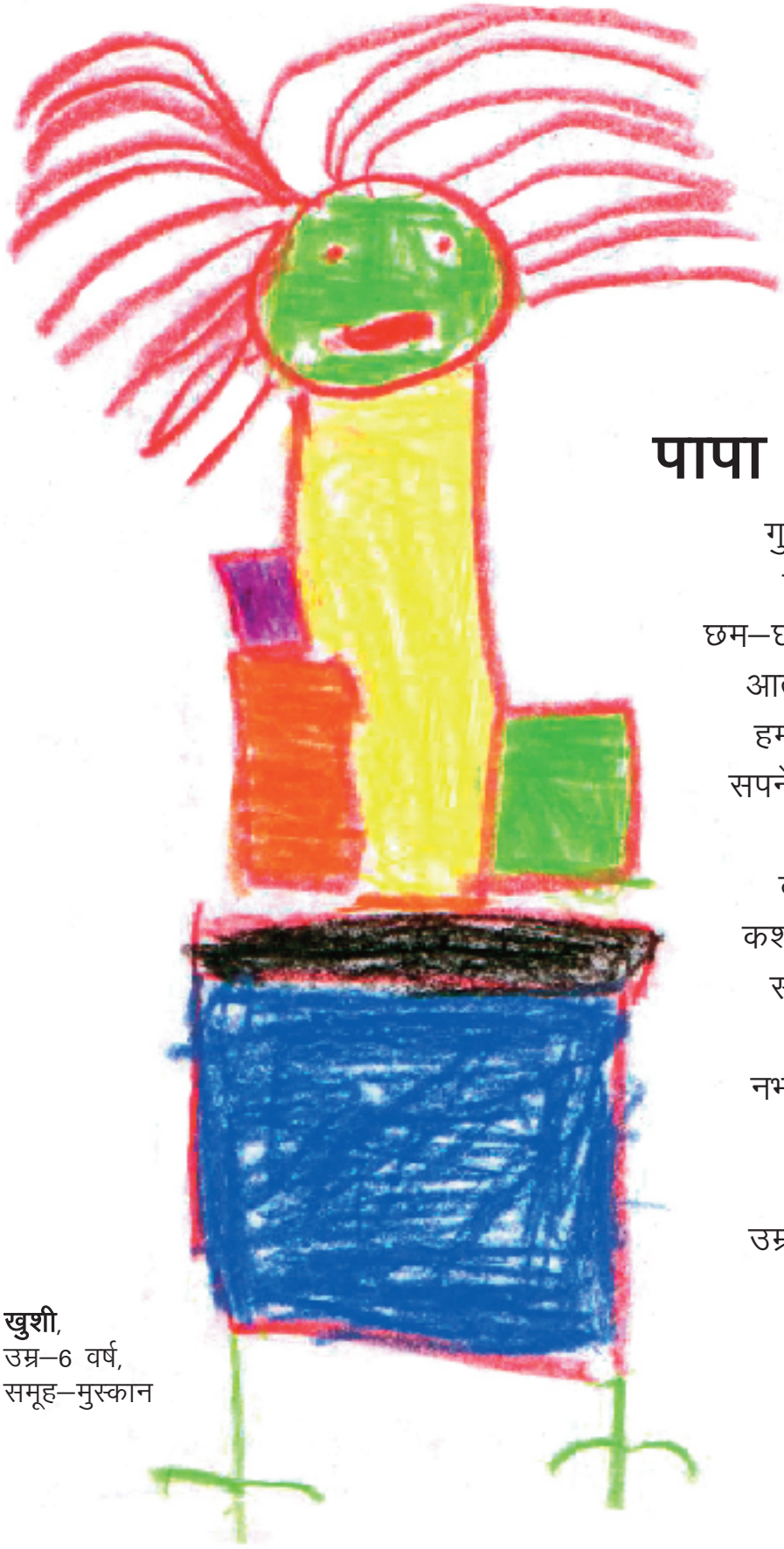

खुशी,
उम्र–6 वर्ष,
समूह–मुस्कान

पापा को मनाओ

गुडिया रानी आओ ना।
हलवा पूरी खाओ ना।
छम–छम नाच दिखाओ ना।
आती–जाती रहती आप।
हमको भी ले जाओ ना।
सपने हमको दिखाओ ना।
राकेट में बिठाओ ना।
दूर–दूर ले जाओ ना।
कश्मीर हमें दिखाओ ना।
सागर में नहलाओ ना।
पापा को मनाओ ना।
नभ की सैर कराओ ना।

सपना मीना,
उम्र–10 वर्ष, समूह–फूल

मनीषा गुर्जर, उम्र–8 वर्ष, समूह–सितारे

नन्ही बूंदे

नन्ही–नन्ही बूंदे बरसी।
आसमान से बूंदे बरसी।
प्यारी–प्यारी कोमल–कोमल।
नाम है इसका कितना प्यारा।
जगह–जगह बूंदे है बरसी।
पेड़ों और पहाड़ों में बरसी।
नदी और नालों में बरसी।
खेतों और बागों में बरसी।
नन्हीं नन्हीं बूंदे बरसी।

आशा यादव, शिक्षिका,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

काली–पीली होली

होली आई होली आई।
रंग बिरंगी होली आई।
काली–पीली होली आई।
सबके रंग लगाती आई।
बच्चों को नहलाती आई।
कपड़ों को भिगोती आई।
सबके रंग जमाती आई।
सबको गंदा करती आई।
नमकीन और मिठाई लाई।
लड्डू बाटी बनवाती आई।
होली आई होली आई
काली–पीली होली आई।

दिलखुश गुर्जर,
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

रेल चली

रेल चली भई रेल चली
रूकती–दौड़ती रेल चली
पों पों करती रेल चली
दूर दूर तक रेल चली
कहीं–कहीं डुलाती है
कभी–कभी मिलाती है
रेल चली भई रेल चली।

अशोक,
उम्र–8 वर्ष, समूह–सागर

कल्पना गुर्जर, उम्र–9 वर्ष, समूह–सितारे

साँप से दोस्ती

एक बार एक रामू नाम का लड़का था। उसके दो बगीचे थे। वो रोज बगीचों की देखभाल करता था। एक दिन वह बगीचे में पानी दे रहा था तो उसे पौधे के नीचे तीन अण्डे दिखाई दिए। उसे पता नहीं चल सका कि ये किस जानवर या पक्षी के अण्डे हैं। कुछ देर बाद वहाँ से एक आदमी गुजर रहा था। रामू ने उसे बुलाया और उससे पूछा, ''ये किसके अण्डे हैं?'' तो उस आदमी ने बताया ''ये तो साँप के अण्डे हैं।'' रामू ने उस आदमी को अण्डो के बारे में बताने के लिए धन्यवाद दिया। वह आदमी वहाँ से चला गया। अब रामू जब भी उस बगीचे की देखभाल करने आता उन अण्डों की भी देखभाल करता। कुछ दिनों बाद वहाँ सांप आया। उसने अपने अण्डो को सुरक्षित देखा तो वह बहुत खुश हुआ। वह वहीं छिप गया। उसने देखा कि मेरा अण्डों की देखभाल यह रामू करता है। फिर साँप में रामू को अपना दोस्त बना लिया। उसे कोई नुकसान नहीं पहुँचाया।

आरती मीना,
उम्र–12 वर्ष,
समूह–उजाला

रजनी प्रजापत, उम्र–10 वर्ष, समह–फूलवाड़ी

चतुर लकड़हारा

बीना,
कक्षा–8,
समूह–रिमझिम

एक समय की बात है। एक बहुत घना जंगल था। जंगल वनस्पतियों से ढका हुआ था। जंगल में पक्षियों की आवाजें आ रही थी। जंगल में ठंडी और तेज हवा चल रही थी। आकाश में काले–काले बादल छाये हुए थे। सूरज बादलों से ढका हुआ था। जंगल में शेर बोल रहा था जिससे धरती काँप रही थी। जंगल के पास ही एक गाँव था। गाँव का नाम चन्द्रपुर था। वहाँ का मौसम सुहावना था। रास्तों में कच्ची सड़के बनी हुई थी। गाँव में लोगों का आना–जाना लगा हुआ था। कुएँ से औरतें पानी ले जा रही थी, जिससे मिट्टी के कण उड़ रहे थे। उस गाँव में एक लकड़हारे का परिवार भी था। लकड़हारा रोज जंगल से लकड़ी काटकर लाता और बाजार में बेचकर अपना जीवन यापन करता था। लकड़हारे के दो पुत्र और एक पुत्री थी। एक दिन सवेरे–सवेरे लकड़हारा जंगल में लकड़ी काटने निकला। जंगल में पहुँचने पर लकड़हारा लकड़ी काटने लग गया। लकड़ी काटने के पश्चात कुछ समय बाद उसे एक शेर के दहाड़ने की आवाज सुनाई दी। लकड़हारा डर कर काँपने लगा। फिर शेर लकड़हारे के सामने आ गया। शेर बोला, ''मुझे बहुत जोरे से भूख लग रही है, मैं तुम्हें खाऊंगा, यदि तुम मेरे लिए कोई दूसरा जानवर ला सकते हो तो मैं तुम्हें छोड़ दूंगा।'' लकड़हारे ने कहा, ''तुम मुझे मत खाओ, मैं तुम्हारे लिए दूसरा जानवर लाता हूँ।'' लकड़हारा वहाँ से दूसरा जानवर ढूंढने के लिए आ गया। उसने जंगल में देखा कि एक लोमड़ी पेड़ के नीचे बैठी हुई है। लकड़हारा लोमड़ी के पास गया और बोला, ''लोमड़ी बहन क्या तुम मेरी दोस्त बना. `गी?'' लोमड़ी ने हाँ कर दी और कहा कि, ''तुम मुझे अच्छा–अच्छा खाना खिलाआ. `गे।'' लोमड़ी उस लकड़हारे की चतुराई समझ ना सकी। लकड़हारे ने कहा, ''हाँ ठीक है, मैं तुम्हें रोजाना अच्छा–अच्छा खाना दूंगा।'' यह सुनकर लोमड़ी बहुत खुश

हुई। लोमड़ी ने कहा, ''चलो तुम्हारे घर चलते हैं।'' लकड़हारा लोमड़ी को वापस उसी रास्ते से लेकर आया, जहाँ शेर बैठा हुआ था। लोमड़ी को देखकर शेर जोर से दहाड़ा तो लोमड़ी डरकर भागने लगी। शेर ने एक छलांग लगाई और लोमड़ी की पीठ तोड़ दी। बेचारी लोमड़ी वहीं तड़पकर मर गई। फिर लकड़हारा अपनी लकड़ियों को लेकर जंगल से वापस आ गया। घर आकर लकड़हारे ने सारी बात अपनी पत्नी को बताई। यह सुनकर लकड़हारे की पत्नी बेहोश हो गई। फिर जब लकड़हारे की पत्नी को होश आया तो उसने लकड़हारे से जंगल में जाने के लिए मना कर दिया। उसने कहा जंगल जानवरों का घर है। वे चाहें एक दूसरे का शिकार करें और मारें। पर हमारे कारण कोई जानवर मारा जाये ये अच्छी बात नहीं है। लकड़हारे ने तभी से जंगल में लकड़ी लेने जाना बंद कर दिया और दूसरा काम करने लग गया।

अशोक बैरवा, समूह–वीर शिवाजी, उम्र–12 वर्ष

पिंकी का जन्मदिन

एक बार एक लड़की थी। उसका नाम पिंकी था। वो कक्षा–5 में पढ़ती थी। वह कक्षा में ससबे ज्यादा होशियार थी। एक दिन वो कक्षा में आई तो बहुत खुश थी। क्योंकि उसका जन्मदिन था और उसके हाथ में बहुत सारे निमंत्रण कार्ड थे। उसकी सहेलियों ने पूछा, ''तुम आज ये बहुत सारे निमंत्रण क्यों लाई हो?'' उसने मुस्कुराते हुए कहा, ''आज मेरा जन्मदिन है।'' उसने सबको एक–एक निमंत्रण दे दिया। फिर सबने मिलकर चर्चा की। एक लड़ने ने निमंत्रण पढ़ा और सबको सुनाया कि निमंत्रण में तो यह भी लिखा है कि कोई भी तोहफा नहीं लेकर आए। उन सबने तय किया कि हम सब मोड़ पर पाँच बजे आ जायेंगे। सब मोड़ पर आ गए और वे मोटर में बैठकर चल दिये। पिंकी के गाँव का नाम झौपड़ी था। जैसे ही बस गाँव के स्टेण्ड पर पहुँची सब उतर गए। वे सब पिंकी के घर पर गए। उन्होंने देखा कि पिंकी उनका दरवाजे पर इंतजार कर रही थी। पिंकी ने कहा, ''तुम इतने लेट क्यों आए हो?'' एक लड़की जिसका जिसका नाम श्रद्धा था वह बोली, ''मोड़ पर मोटर जल्दी नहीं आई थी इसलिए लेट हो गए।'' फिर पिंकी सबको घर के अन्दर लेकर गई। घर के अन्दर जाकर देखा तो बहुत सारी रंग–बिरंगी दरी पट्टी बिछ रही थी। थोड़ी देर बाद पिंकी का जन्मदिन मनाया। सबको केक खिलाया। पिंकी की सहेलियाँ एक दिन रूकी और दूसरे दिन चली गई।

रजनी प्रजापत, उम्र–9 वर्ष, समूह–फुलवाड़ी

सुनहरा बारहसिंगा

रामलखन सैनी, उम्र–13 वर्ष, समूह–उजाला

प्राचीन काल में चम्बल नदी के किनारे एक सुनहरा बारहसिंगा रहता था। बारहसिंगा के पैर काले और सफेद थे। शरीर पर सफेद धब्बे थे और लम्बे सींग थे। बारहसिंगा चम्बल के किनारे हरी–हरी घास खाता और फूलों में उछलता रहता था। एक दिन बारहसिंगा चम्बल नदी के किनारे हरी घास में सोया हुआ था। वह सुबह उठा तो उसे आवाज सुनाई दी। ''बचाओ, बचाओ।'' बारहसिंगा ने उठकर देखा तो उसे एक आदमी नदी में डूबता नजर आया। बारहसिंगा ने कहा, ''तुम घबराओ मत मैं आ रहा हूँ।'' बारहसिंगा पानी में कूद पड़ा। बारहसिंगा ने आदमी के पास जाकर कहा, ''तुम मेरी पीठ पकड़ लो।'' आदमी ने बारहसिंगा की पीठ पकड़ ली। बारहसिंगा तैरता हुआ नदी के किनारे आ गया और आदमी को बचा लिया। बारहसिंगा ने आदमी से कहा, ''तुम चाहो तो कुछ दिन मेरे साथ यहाँ रह सकते हो।'' आदमी ने सुनहरे बारहसिंगा की बात मान ली। आदमी ने बारहसिंगा को अपने बारे में बताया, ''मैं एक व्यापारी हूँ और नदी में पानी पीने गया था। वहाँ मेरा पैर फिसल गया इस कारण से मैं डूब रहा था। तुम्हारा बहुत धन्यवाद जो तुमने मुझे बचा लिया नहीं तो मैं डूबकर मर जाता।'' बारहसिंगा ने कहा यह तो मेरा फर्ज था।

कालूराम नायक, उम्र–14 वर्ष, समूह–तिलक

बुढ़िया के बेटे

एक बार एक गरीब बुढ़िया थी। उसके तीन बेटे थे। वे कभी कोई गलत काम नहीं करते थे। इसलिए उनके पास ज्यादा कुछ था भी नहीं। एक दिन बुढ़िया बहुत तेज बीमार हुई और मर गई। तीनों बेटों को बुढ़िया के मरने का बहुत दुःख हुआ। उन्हें जब भी बुढ़िया की याद आती तीनों बेटे रोने लगते।

गाँव से दूर राजा अपनी बेटियों से पूछ रहा था कि ''तुम किसकी किस्मत से खाती हो?'' बड़ी बेटी ने जवाब दिया ''मैं आपकी किस्मत से खाती हूँ।'' राजा यह सुनकर खुश हो गया। फिर उसने बिचली बेटी से पूछा ''तुम किसकी किस्मत का खाती हो?'' उसने भी यही जवाब दिया। राजा ने फिर सबसे छोटी बेटी से पूछा तो उसने जवाब दिया कि ''मैं तो मेरी किस्मत का खाती हूँ।'' राजा यह सुनकर उदास हो गया। राजा ने सोचा कि मैं सबसे छोटी बेटी की शादी किसी गरीब के साथ करूंगा। राजा ने उसकी शादी के लिए गरीब लड़का ढूंढने के लिए मंत्री को गाँव में भेजा। मंत्री को वे बुढ़िया के तीनों अनाथ बेटे रोते हुए मिले। मंत्री राजा की इच्छानुसार बुढ़िया के छोटे बेटे से रिश्ता तय करके चला गया।

कुछ दिनों बाद एक बुढ़िया उनके घर पर आई। उसने वहाँ आकर सबसे छोटे बेटे से कहा कि ''मुझे खाना मिलेगा क्या?'' उसने कहा हमारे घर में और खाना तो है नहीं। भाईयों का खाना मैं दे नहीं सकता। पर तुम मेरे हिस्से का खाना खा सकती हो।'' बुढ़िया खाना खाकर चली गई। फिर कुछ दिनों बाद बुढ़िया वापस आई। उस समय वहाँ बड़ा बेटा था। बुढ़िया ने उससे भी खाना खिलाने के लिए कहा तो उसने भी छोटे भाई की तरह बुढ़िया को खाना खिला दिया। बुढ़िया भाईयों के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुई। वह बुढ़िया एक जादुई परी थी। उसने तीनों भाईयों से कहा ''बताओं मैं तुम्हारी क्या मदद करूँ?'' भाईयों ने कहा, ''छोटे भाई की शादी राजा की बेटी से तय हो गई है। हमारे पास तो खाने के लिए भी कुछ नहीं है। बारात लेकर कैसे जायेंगे और बाद में लड़की को क्या खिलाएंगे।'' बुढ़िया ने अपनी जादुई छड़ी घुमाकर उस जगह को हरा–भरा, बाग–बगीचों वाली बना दी। उन तीनों भाइयों के रहने के लिए एक महल बना दिया।

जब बुढ़िया के बेटे बारात लेकर गये तो राजा और मंत्री उनके ठाट–बाट देखकर दंग रह गये। बुढ़िया के बेटों और अपनी बेटी का भाग्य देख राजा ने अपनी तीनों बेटियों का विवाह उनसे कर दिया। अब सारे खुशी से रहने लगे।

रामावतार नायक, उम्र–11 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

शेर की भूख

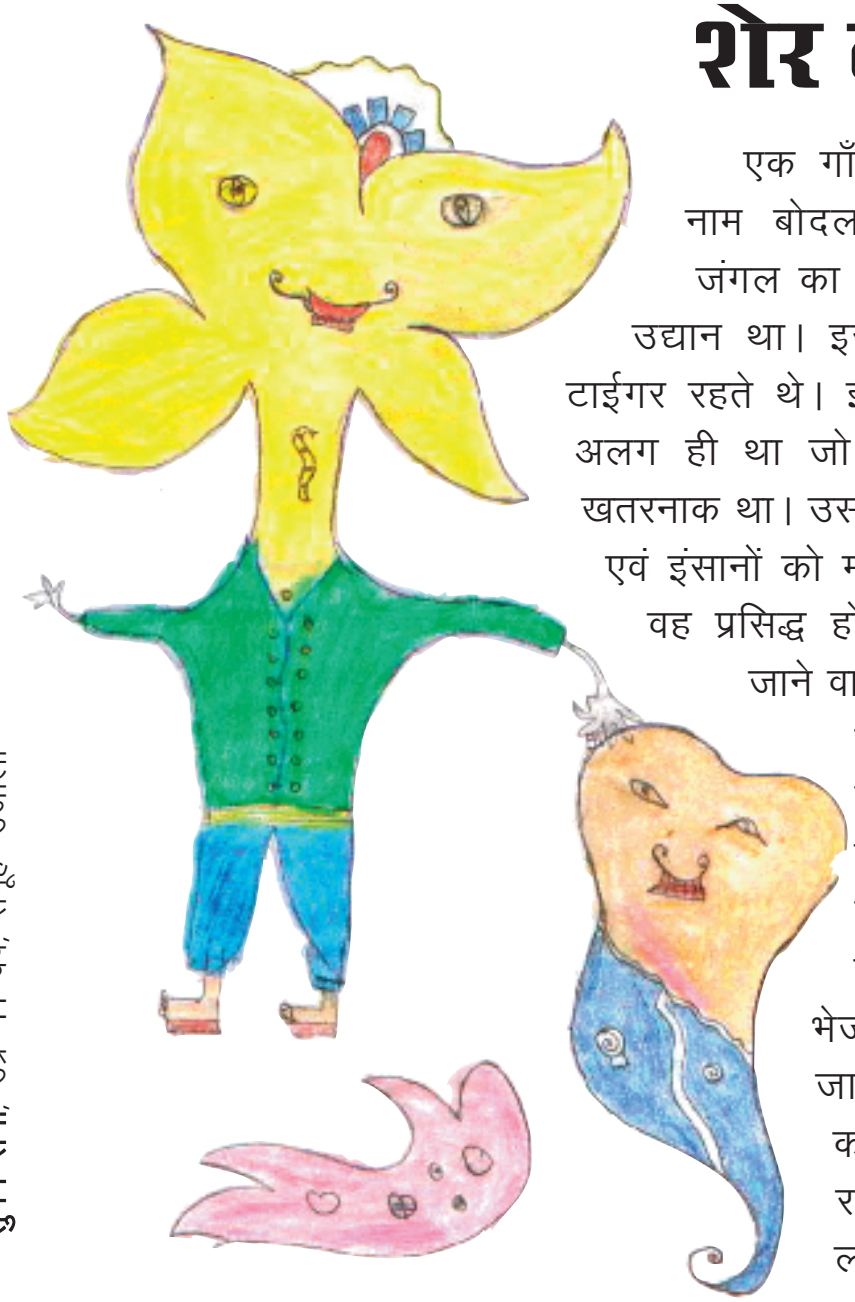

सुमन सैनी, उम्र–11 वर्ष, समूह–उजाला

एक गाँव था। उस गाँव का नाम बोदल था। उस गाँव के जंगल का नाम रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान था। इस जंगल में बहुत से टाईगर रहते थे। इन सबमें एक टाइगर अलग ही था जो बहुत ताकतवर और खतरनाक था। उसने कई पालतु जानवरों एवं इंसानों को मार दिया था। इसलिए वह प्रसिद्ध हो गया था। जंगल में जाने वाली गाय, भैंस, बकरियों को वह खा जाता था। एक बार कुछ दिनों तक लोगों ने अपने जानवरों को जंगल में चरने के लिए नहीं भेजा। जंगल में शेर जानवरों का इंतजार करता रहा और भूखा ही रहा। एक दिन एक लोमड़ी उसके पास से जा रही थी तो उसने शेर से पूछा, ''क्यों टाईगर मामा, क्या हुआ, कैसे परेशान हो?'' टाईगर ने कहा, ''पिछले दो–तीन दिन से मैंने भोजन नहीं किया, मुझे कोई शिकार भी नहीं मिला है। मुझे बहुत जोर से भूख लग रही है। अब मैं तुम्हें ही खाकर अपनी भूख मिटाऊंगा।'' लोमड़ी ने कहा, ''अरे मैं तो बचपन से ही तुम्हारी माँ की तरह थी, और तुम मुझे खाना चाहते हो। रूको मैं तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था करती हूँ। मैं किसी जानवर को ढूंढकर आपको बताती हूँ।'' लोमड़ी यह कहकर वहाँ से चली गई। जब शेर को कुछ नहीं मिला तो वह भी गाँव में आकर रहने लगा।

धर्मसिंह गुर्जर, उम्र–10, समूह–फूलवाड़ी

याद की धूप–छाँव में

अभी कुछ बाकी है

सवाईमाधोपुर जिला राजस्थान के उन पिछड़े जिलों में आता है जहाँ महिला साक्षरता दर 47 प्रतिशत हैं। जब बात ग्रामीण क्षेत्र में अनुसूचित जनजाति की की जाये तो ये आंकड़े और ज्यादा चिन्ताजनक हो जाते हैं। ऐसे में हम समझ सकते हैं कि कितनी लड़कियाँ अनिवार्य शिक्षा ले पाती होंगी।

सवाई माधोपुर जिले की रांवल ग्राम पंचायत के गरीब किसान परिवार में जन्मी सीमा मीणा के लिए मिडिल तक शिक्षा लेना और इससे भी आगे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करना बिना किसी बाहरी सहयोग के संभव नहीं था। यह संभव हुआ ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा संचालित उदय सामुदायिक पाठशाला खुलने से। सीमा के एक भाई और दो बहनें हैं। वह तीन बहिनों में मंझली है। माँ खेतों में काम कर घर चलाने का प्रयास करती है। पिता की तबीयत अक्सर खराब रहने से वे परिवार में कोई विशेष सहयोग नहीं कर पाते हैं। घर परिवार और समाज में पढ़ाई के प्रति विशेष रूझान नहीं होने पर बच्चों की रूचि भी परम्परागत कामों में ही बनने लगती है। यहाँ तो शिक्षा से नहीं जुड़ने की कई वजह भी थी। नतीजा बड़ी बहिन स्कूल जाने के बाद भी शिक्षा से वंचित रह गई। लेकिन अक्सर शरमाने और किसी से बात नहीं कर पाने वाली सीमा के साथ ऐसा नहीं हुआ। उसने ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा संचालित उदय सामुदायिक पाठशाला और वहाँ के अध्यापकों द्वारा दी जाने वाली तमाम सुविधाओं का लाभ उठाया। अपनी रूचि और क्षमताओं को जानते हुए नये स्तर तक पहुँचाने का प्रसास किया। पुस्तकालय में नियमित जाना, खेल क्लास में भाग लेना, कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ना उसकी नियमित दिनचर्या का हिस्सा था। परिवार की तरफ से उसे पशु चराने, घास काटने, जंगल जाने और घर के कामों के लिए ही कहा जाता था। पर शिक्षकों और अन्य साथियों के प्रोत्साहन ने उसे और बेहतर करने की प्रेरणा दी। जब भी वह स्कूल नहीं आती तो शिक्षक उसके घर पहुँच जाते और माता–पिता को समझाकर उसे स्कूल ले आते। धीरे–धीरे हैण्डबॉल में उसने अच्छा प्रदर्शन करना शुरू किया। उसकी और उसके साथियों की हैण्डबॉल टीम बनाई ताकि उसका अभ्यास नियमित रहे। टीम बनते ही जिला स्तर पर सीमा की टीम ने भाग लिया। जिले में प्रथम स्थान आने और अन्य टीमों से बहुत आगे होने के कारण पूरी टीम को राज्य स्तर पर खेलने के लिए चुना गया। अब तक सवाई माधोपुर का हैण्डबॉल में कहीं कोई

नाम नहीं था। सभी की अपेक्षाओं के विपरीत टीम लगातार मैच दर मैच अपने प्रदर्शन से सबको चौंकाते हुए सेमी फाईनल में प्रवेश कर गई। जिन्हें टीम से कोई उम्मीद नहीं थी अचानक उन्हे भी डार्क–हॉर्स[1] टीम नजर आने लगी। एक नया चेम्पियन नजर आने लगा। टीम बढती अपेक्षाओं और दबाव के बीच खिताब की प्रबल दावेदार पूर्व चेम्पियन बाड़मेर टीम की चुनौती का सामना करने के लिए मैदान में उतरी। अब तक बच्चे खेल का आनन्द उठा रहे थे। जो लोग उनके अच्छे खेल पर चकित होकर तालियाँ बजाते थे वे अब उनसे कुछ और ही चाहते थे। टीम इस तरह के दबाव के बीच खेलने के लिए तैयार नहीं थी। टीम की सफलता का अभियान सेमी फाईनल में समाप्त हो चुका था। पर ऐसे बहुत लोग थे। जिनकी नजर टीम के प्रदर्शन पर शुरू से थी। उन्होंने टीम के प्रयासों की दिल खोलकर तारीफ की। अब टीम को तीसरे स्थान के लिए उस टीम से खेलना था जिसका अभियान भी सेमी फाईनल में समाप्त हो गया था। टीम पिछले मैच के अनुभव से आगे बढ़ने को तैयार थी। सीमा और उसकी टीम के प्रयासों के चलते टीम ने राज्य में तीसरा स्थान प्राप्त किया। अब सीमा और उसकी टीम अन्य लोगों की नजर में छा चुकी थी। टीम द्वारा राज्य स्तर पर प्रथम स्थान नहीं बनाने और अपनी टीम से किसी भी खिलाड़ी का राष्ट्रीय स्तर पर चयन नहीं होना निराशाजनक था। यह हमारी चयन प्रक्रिया पर भी सवाल खड़ा करता है। पर इस टीम को ये सब मंजूर नहीं था और वापस आकर पूरी टीम अगले साल की तैयारी मे जुट गई।

सुनीता लुहार,
उम्र–7 वर्ष,
समूह–बरगद

वर्ष 2016–17 में टीम ने निचले स्तर से खेलना शुरू किया। इस टीम में कुछ नए चेहरे भी शामिल हुए। क्योंकि पिछली टीम के कुछ खिलाड़ी अपनी पढ़ाई पूरी कर आगे पढ़ाई के लिए अन्य विद्यालयों में जा चुके थे। पर ये सब तो होता रहता है। एक बात जो नहीं बदलती वह है शेष टीम द्वारा अपने पूर्व खिलाड़ियों की

1. ऐसी टीम जिसके जीतने की अपेक्षा नहीं होते हुए भी जीत जाये।

उपलब्धियों से आगे अपनी टीम को लेकर जाने का जज्बा। इस बार टीम को डार्क–हॉर्स नहीं बल्कि खिताब की दावेदार टीम माना जा रहा था। टीम अपेक्षाओं के अनुरूप प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ती गई। टीम स्कूल स्तर, जिला स्तर, और फिर राज्य स्तर पर आने वाली सभी टीमों को एकतरफा मुकाबलों में पीछे छोड़ते हुए सेमी फाईनल में पहुँच गई। यही वह मुकाम था जहाँ टीम का अभियान गत वर्ष समाप्त हुआ था। सामने एक बार फिर पूर्व चेम्पियन–बाड़मेर आत्मविशवास से भरी खड़ी थी। मानो वह एक बार फिर इतिहास दोहराना चाहती है। अपने पूर्व साथियों की सफलता को और आगे ले जाने का वक्त आ गया था। टीम ने अपने प्रदर्शन से यह साबित कर दिया कि इस बार आत्मविश्वास, कौशल, नेतृत्व और आपसी तालमेल में वह सबसे बेहतर हैं। परिणामस्वरूप बाड़मेर की टीम खिताब का बचाव करने में सफल नहीं हो सकी। सर्वश्रेष्ठ टीम कहलाने से एक कदम दूर खड़ी थी। इरादों के अनुरूप प्रदर्शन करते हुए सीमा और उसकी टीम लगातार 18 जीतों के बाद अपनी टीम को राजस्थान चेम्पियन बनाने में सफल रही। टीम ने अपने जिले–सवाई माधोपुर को, अपने विद्यालय को, खुद को, अपने परिवार और समाज को वो सम्मान दिलाया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। मैन ऑफ दी मैच, मैन ऑफ दी सीरीज सब सीमा के नाम रहा और फिर वह सूचना भी आई जब सीमा सहित चार लड़कियों का चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए किया गया। टीम का सवाई माधोपुर पहुँचने पर सम्मान और प्रोत्साहन का लम्बा दौर वर्ष भर चला।

टीम की इस उपलब्धि के पीछे प्रत्येक खिलाड़ी की मेहनत छिपी थी। प्रत्येक खिलाड़ी जब विपरीत परिस्थितियों से निकलकर कोई मुकाम हासिल करता है, उससे पूर्व उसे अनेक ऐसी परिस्थितियों से मैच खेलना होता है जो खेल मैदान की चुनौतियों से कहीं ज्यादा कठिन होती हैं। ऐसी हर परिस्थिति से जूझने वाली टीम और उसकी प्रत्येक खिलाड़ी और समर्थकों के प्रयास वाकई प्रसंशनीय हैं।

आज सीमा अपनी पढ़ाई नियमित रखना चाहती है। अपना खेल भी उसे पढ़ाई की तरह ही प्रिय है। वह खेल अकादमी में जाना चाहती हैं। जहाँ उसे रहने, खाने, पढ़ने और खेलने की सुविधाएं आसानी से उपलब्ध हो सकें। कौन जानता है कल यही लड़की भारत की टीम में भी खेलती नजर आ जाये। जीवन यापन संबंधी रोज–रोज की परेशानियों से जूझते परिवार की बेटी के लिए यहाँ तक का सफर बिलकुल भी आसान नहीं था। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र और उसके शिक्षकों ने हर कदम पर सीमा और उसके परिवार का साथ दिया और मार्गदर्शन किया। सीमा से बात करते हैं तो वह बताती है कि ''अभी बहुत कुछ करना बाकी है।''

विष्णु गोपाल

मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी

गाँव में एक जमींदार था। वह बहुत संपन्न नहीं था फिर भी खाते–पीते लोगों में उसकी गिनती थी। उसका मकान आधा पक्का और आधा कच्चा था। वह साधारण व्यक्ति था इसलिए शान– शौकत से नहीं रहता था। फिर घर बाहर के लोगों के कहने पर उसने पक्का मकान बनवाया। घर की पुरानी ईंटें उखाड़कर एक जगह रख दी गई थी। अब गाँव में ऐसे दो–एक मकान ही थे। जो भी उधर से निकलता, तो वह मुड़कर देखता ही चला जाता था।

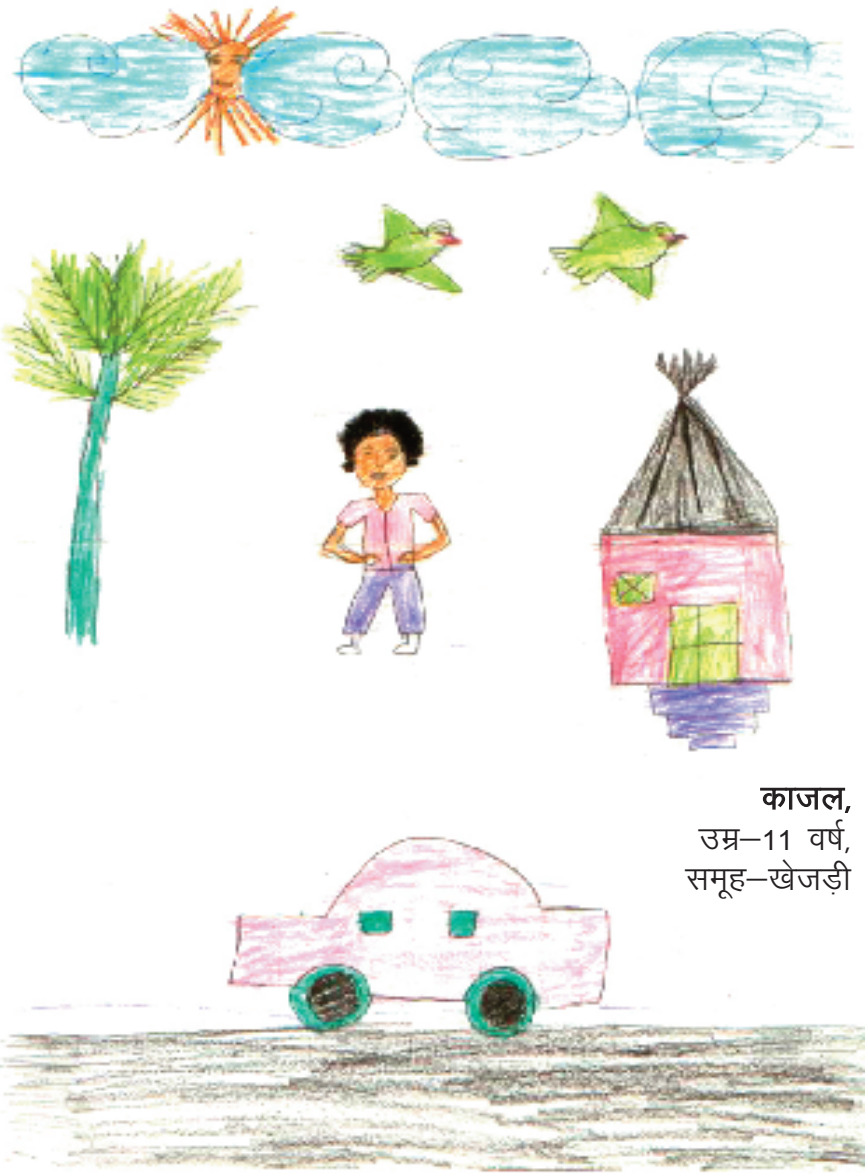

काजल,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–खेजड़ी

उसके मकान के सामने लंबा–चौड़ा खाली मैदान था। उसी के एक कोने में पुरानी ईंटें जमा थी। वह सोचता रहता था कि इन पुरानी ईंटों का क्या किया जाए? बेमतलब में जगह घिरी हुई थी। कई बार वह सोच चुका था कि इन ईंटों को किसी को दे दें, लेकिन हर बार मन मना कर देता था।

एक दिन जमींदार अपनी बैठक में हुक्का पी रहा था। एक व्यक्ति ने जमींदार को सुझाव देते हुए कहा, ''ठाकुर साहब, अब बैठने के लिए सामने एक चौबार और

बनवा लो। ईंटें तो आपके पास पड़ी हुई हैं। बस लकड़ी की चौखटें बनवानी पड़ेंगी। सो हरिया बढ़ई से कह दो, बना देगा।''

ठाकुर का बड़ा लड़का बोला, ''बड़े काका ठीक कह रहे हैं। अभी तो घर की महिलाओं को आने–जाने में संकोच सा बना रहता है। चौबारे में अपनी चाहे जैसी हंसी मजाक की बातें भी बिना किसी संकोच के कर सकते हो। घर के और लोगों की नींद खराब नहीं होगी।'' दो–एक लोगों ने भी उसकी बात में हाँ में हाँ मिलाई। आखिर में चौबारा बनाने के लिए जमींदार ने मन बना लिया।

दूसरे दिन ही जमींदार ने हरिया को बुलाया और उससे दरवाजे बनाने के लिए कह दिया। इधर राज–मजदूर को बुलाकर मकान के सामने मैदान के दूसरे किनारे पर नींव खुदवाना शुरू कर दी। तीन दिन में नींव भरकर राज–मजदूरों ने दीवारों की चिनाई शुरू कर दी। इस बीच लकड़ी की चौखटें भी बनकर तैयार हो गई थी।

दरवाजे और चौखटें बनकर आ गई और उन्हें दीवारों पर रखकर चिनाई शुरू कर दी। लगभग तीन दिन में चौबारा बनकर तैयार हो गया। ढंग से सफाई करवाकर चौबारा बैठने के लिए तैयार हो गया। चौखटों पर आम के पत्ते और गेंदे के फूल की मालाएं लगाई गई।

घर द्वार पर लगने वाला जमावड़ा अब चौबारे में लगने लगा। चौबारे में लोग बहुत जल्दी आ जाते और देर रात तक बैठे गपियाते रहते। हुक्का, तंबाकू, पानी आदि वहाँ बना रहता। चौबारे के बाहर कौने से उपले सुलगते रहते।

लोग चौबारे की मुख्य चौखट पर चुनाई की गई ईंटों को अक्सर देखा करते। लाल ईंटों के बींच एक मैली ईंट दिखती, लेकिन उसके बारे में न कोई सोचता और न कोई कुछ कहता। एक दिन एक व्यक्ति ने कहा, ''चौखट के ऊपर यह कुछ मैला सा है। जो लोग वहाँ थे, उन्होंने भी उस ईंट को देखा और सिर हिलाते हुए हाँ में हाँ मिलाई। ठाकुर बोला, ''हाँ, कह तो ठीक ही रहे हो। वैसे थोड़ा–बहुत फर्क सभी ईंटों में आता ही है।''

वहाँ ठाकुर के चाचा भी मौजूद थे। वे उस ईंट को गौर से देख रहे थे। मोरी की सभी ईंटें नींव में लग गई थी। लेकिन एक ईंट चौखट पर चुनी गई थी। उन्होंने बताया कि घर की ईंटें निकाली गई थी। उनमें कुछ ईंटें मोरी की थी। एक ईंट मोरी के ऊपर चुन गई है। बाकी तो नींव में लग गईं हैं। सब लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। ठाकुर कुछ कहने ही जा रहे थे, तब तक बुजुर्ग मुखिया बोल उठे, ''अरे भाई, 'मोरी की ईंट चौबारे चढ़ी'। इसमें सोचने की क्या बात है। इस ईंट का भाग्य है कि अब इस चौबारे के चौखट की शोभा बढ़ा रही है।''

स्रोत – एन.बी.टी. बुक ट्रस्ट इंडिया

मटरगश्ती बड़ी सस्ती

भाषा की सहेलियाँ
बूझो यार पहेलियाँ

जितेन्द्र नायक, उम्र–12 वर्ष, समूह–वीर शिवाजी

1. एक खेत ऐसा, जिसमें ऊपर तोता नीचे बगुला।
2. कुत्ता गया पाताल में, पूँछ रह गई हाथ में।
3. सफेद धरती, काला बीज।
4. हरा मकान, लाल दरवाजा, उसमें बैठे काले इंसान।
5. तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
6. एक ड्राइवर, चार सवारी, उसके पीछे जनता सारी।
7. बिल्ली की पूँछ हाथ में, बिल्ली रहे इलाहबाद में।
8. एक लड़की बारह कक्षा पढ़कर वापस एक में आ गई।

हरिसिंह गुर्जर, कक्षा–7, राज.उच्च प्राथ. विद्या. डांगरवाड़ा

हीहीही-ठीठीठी

1. एक बार शिक्षक ने पूछा, ''बच्चों बादाम खाने से क्या होगा?

शशिधर बोला, ''बादाम खत्म हो जायेगी, गुरूजी।''

ज्योति मीना, समूह–खूशबू, उम्र–10 वर्ष

वंदना महावर, उम्र–8 वर्ष, समूह–बरगद

2. एक व्यक्ति बैंक में गया। उसने पूछा, ''मैं आज एक चेक जमा करवाऊँगा तो वह कब तक क्लीयर हो जायेगा?''

बैंक मैनेजर – ''तीन दिन में।''

ग्राहक – ''मेरा चैक सामने वाली बैंक का है, दोनों आमने–सामने हैं फिर भी इतना समय लगेगा।''

बैंक मैनेजर – ''श्रीमान यही प्रोसिजर है, फोलो करना पड़ता है। सोचो आप कहीं जा रहे हैं और पास में ही शमशान है। अगर शमशान के बाहर ही आप मर जाते हैं तो आपको सीधे शमशान में थोड़े ही जलायेंगे।''

जीवनेन्द्र सिंह, (वाट्सएप के माध्यम से)
शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

सविता मीना, कक्षा–9,
राजकीय विद्यालय लहसोड़ा

एक बार एक लड़का था। वह अपनी माँ के साथ एक छोटे से गाँव में रहता था। वह अपनी माँ का कुछ भी काम नहीं करता था। उसकी माँ बूढ़ी हो चुकी थी। फिर भी उस बुढ़िया का बेटा काम नहीं करता था। एक बार शाम का समय था। बुढ़िया व उसका बेटा सो रहे थे। बेटे को एक सपना आया कि एक ऐसा पेड़ है जिसमें पैसे ही पैसे आते हैं। वह अचानक से उठ गया। वह सोचने लगा कि अगर वह पेड़ मुझे मिल जाए तो मेरी माँ को काम नहीं करना पड़ेगा। जब सुबह हुई तो वह उस पेड़ की खोज में निकल गया। ...

किरन मीना, *समूह–सावन, उम्र–12 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

मुर्गा स्कूल जायेगा
बुद्धि को पढ़ायेगा ...

पवन गुर्जर, *समूह–सागर, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

पहेलियों के ज़वाब –

1. मूली 2. रस्सी–बाल्टी 3. पेन–कॉपी 4. तरबूज 5. रबर 6. मुर्दा 7. पतंग 8. घड़ी

विकास, उम्र–11 वर्ष, समूह–तिरंगा